4

आदमी, जिसने एक परिवार को बचाया

(2 राजाओं 4:1-7)

पिछले पाठ में एलीशा ने एक नाटकीय, सार्वजनिक आश्चर्यकर्म के साथ तीन सेनाओं को बचाया था। इस पाठ में हम देखेंगे कि किस प्रकार उसने एक खामोशी से आश्चर्यकर्म कर एक घर को बचाया। पृष्ठभूमि एक अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य से बदलकर एक व्यक्ति के परिवार में चली जाती है। तो क्या हम बाद वाले आश्चर्यकर्म को पहले वाले आश्चर्यकर्म से कम महत्वपूर्ण मानें? कदापि नहीं! कहा जाता है कि जैसा परिवार होगा वैसा ही देश होगा। जो बात घर को मज़बूत बनाती है वही देश को मज़बूत बनाती है, और जो बात देश को मज़बूत बनाती है वही संसार को मज़बूत बनाती है।

एक घर की सहायता करके एलीशा अपने पूर्वाधिकारी एलिय्याह के पदचिह्नों पर चल रहा था (देखें 1 राजाओं 17:8-24)। परमेश्वर को घर की चिंता होती है और हमें भी होनी चाहिए! पाठ समाप्त करने से पहले हम चर्चा करेंगे कि किस प्रकार से आज परेशान परिवारों की सहायता की जा सकती है।

उस समय बिना आशा के एक परिवार (4:1-7)

दिल टूटना

कहानी के आरम्भ होने पर एलीशा इस्राएल में वापस आ जाता है। वह नगर में ही होगा जहां नबियों की पाठशालाओं में से एक बेथेल, यरीहो या गिलगाल में (2 राजाओं 2:3, 5; 4:38)। उसके वहां होते ''भविष्यवक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री'' (2 राजाओं 4:1क) उसके पास आई। इस स्त्री के विवरण से हमें पता चलता है कि कुछ प्रशिक्षण ले रहे नबी (''भविष्यवक्ताओं के चेले'') उम्र में उन से बड़े थे जिन्हें आज हम ''कॉलेज की उम्र'' (18 से 22 साल) कहते हैं। यह हमें यह भी बताता है कि प्रशिक्षण लेने वाले लोग कुंवारे नहीं थे। कुछ लोग दावा करते हैं कि अविवाहित होना विवाहित होने से पवित्र स्थिति है, परन्तु बाइबल बताती है कि ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए'' (इब्रानियों 13:4क)।

उस स्त्री की कहानी बड़ी दुखद थी। उसके गालों पर सूखे आंसू देखें और उसकी कांपती हुई आवाज़ को सुनें जब वह कह रही थी, ''तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए'' (2 राजाओं 4:1ख)। उसने अपने पति को एलीशा का ''दास'' बताया और बाद में अपने आपको एलीशा की ''दासी'' कहा (आयत 2)। वह और उसका पति दोनों भविष्यवक्ता की शिक्षाओं को सुनने और मानने को तैयार रहते थे।

फिर उसने कहा कि उसका पति ''यहोवा का भय मानने वाला'' था। यानी उसके मन में परमेश्वर और उसके वचन के लिए बड़ा सम्मान था। बाइबल से बाहर की यहूदी परम्परा इस आदमी को ओबद्याह बताती है जिसने दो गुफ़ाओं में एक सौ नबियों को छुपा रखा था और उन्हें खाना खिलाया था (देखें 1 राजाओं 18:3, 4)।[1] परन्तु ऐसा लगता नहीं है कि राजा अहाब के घराने का प्रबन्धक प्रशिक्षण पाने वाला नबी हो। चलो इतना ही मान लेते हैं कि उस स्त्री का पति एक *भला* मनुष्य था। क्या भले लोगों पर त्रासदी आ सकती है? हां, आ सकती है। क्या यह प्रभु की सेवा पूरे मन से करने वालों के साथ आ सकती है? हां, आ सकती है, और आती है।

उस स्त्री का परमेश्वर का भय मानने वाला पति मर गया था और इतनी बात से ही उसका दिल टूट गया होना चाहिए। उसे उम्मीद थी कि जीवन भर उसके पास वह रहेगा, परन्तु अब रात को वह अचानक एक बड़े और खाली बिस्तर पर अकेली लेटी है। त्रासदी यहीं खत्म नहीं हो गई। उसका पति उसके साथ पालन-पोषण करने के लिए दो छोटे बेटे छोड़ गया था (2 राजाओं 4:1, 5)। प्राचीन संसार में किसी स्त्री से अधिक असहाय केवल वही विधवा का कमाने वाला न हो और उसके बच्चे उस पर निर्भर हों। आपमें से कई लोग इस बात को समझ सकते होंगे कि आज ''अकेली मां या पिता'' द्वारा बच्चों का पालन पोषण करना कैसा हो सकता है। इस चुनौती को जो आपके सामने है एक सौ से गुणा करने और आपको एलीशा के समय की उस विधवा माता के सामने आई परेशानी का कुछ अहसास हो जाएगा।

त्रासदी और बढ़ती है: स्त्री का पति न केवल उसे आमदन के किसी साधन के बिना छोड़ गया था बल्कि वह उसे बुरी तरह से कर्ज़ में डुबो गया था। हम नहीं जानते कि यह कैसे हुआ। शायद गलती उस आदमी की थी। परमेश्वर के कई विवेकी, गुणी सेवकों ने गलत आर्थिक निर्णय लिए हैं। सुझाव दिया जाता है कि उसका पति कुछ अधिक ही उदार होगा। उस परम्परा के अनुसार जिसमें दावा किया जाता है कि ओबद्याह ही वह पति था, जोसेफस ने कहा है कि उसने उन नबियों को जिन्हें उसने छिपाया था खिलाने के लिए उदार लिया था।[2] और उसके मरने पर, उसकी पत्नी के पास कर्ज़ लौटाने का कोई तरीका नहीं था।[3]

यह सम्भव है कि इस मामले में उस पति की गलती न हो। वह ऐसे देश में परमेश्वर का सेवक था जहां परमेश्वर के सेवकों को तुच्छ जाना जाता था। उसकी आमदनी का साधन जो भी हो, यह बहुत कम होगा। शायद काम देने वाला उसे उसकी पूरी मजदूरी नहीं दे पाया। शायद जिन लोगों को उसने दिया था उन्होंने कर्ज़ नहीं लौटाया। शायद उसे अपने परिवार को खिलाने के लिए उदार लेना पड़ा। इस बात से आश्वस्त कि वह कर्ज़ लौटा ही देगा, परन्तु जीवन संक्षिप्त और अनिश्चित है और उसके नेक इरादे उसी के साथ मर गए।

त्रासदी अपने ऊपर एक और त्रासदी ले आई। परन्तु सबसे बुरी बात यह हुई कि उसके पति का साहूकार उसके दो बेटों को लेने आ रहा था। आज जब हम किसी प्रतिष्ठित उधार देने वाली संस्था से कर्ज़ लेते हैं तो आमतौर पर हमें ज़ामिनी (अर्थात ज़मानत) देनी पड़ती है। वह जामिनी आमतौर पर सम्पत्ति की होती है जैसे घर या कार या भूमि के रूप में। यदि हम कर्ज़ लौटाते नहीं हैं तो हमने जो भी ज़ामिनी दी होगी वह ली जा सकती है। एलीशा के समय में ''ज़ामिनी'' आम तौर पर कर्ज़ लेने वाले व्यक्ति की काम करने की क्षमता होती थी। यदि वह व्यक्ति कर्ज़ न लौटाता तो उसे (और उसके परिवार को) लिया जा सकता था (देखें मत्ती 18:25)। मूसा की

व्यवस्था में इसकी अनुमति थी चाहे व्यवस्था ने सेवा की किस्म और अवधि को सीमित करने का प्रयास किया (देखें निर्गमन 21:1, 2; लैव्यव्यवस्था 25:39-41; व्यवस्थाविवरण 15:1-11)। क्या आप मूसा की व्यवस्था के अधीन न होकर प्रसन्न नहीं हैं? क्योंकि उस आदमी को नहीं लिया जा सकता था जिस कारण शाहूकार ने अदायगी के रूप में उसके दोनों बेटों को लेने का निश्चय किया।

हमें यह नहीं बताया गया कि कर्ज़ देने वाला कौन था। बाइबल से बाहर की एक परम्परा के अनुसार उसका नाम अहाब का पुत्र और इस्राएल का राजा योराम बताया गया है।[4] जो भी था, उसने उत्तरी राज्य में विश्वासयोग्य व्यक्ति के वचन के लिए कोई हमदर्दी नहीं की होगी। वह बेदर्द, बेरहम और बेतरस था। उस स्त्री के बेटे अब उसका जीवन थे और वे उसकी अन्तिम आशा भी थे। उसने सोचा होगा, ''यदि लड़कों के नौकरी मिलने तक हम जीवित रह जाएं तो बहुत अच्छा होगा!'' साहूकार को इसकी कोई चिंता नहीं थी। उसने पहले ही उस स्त्री के घर में जो उसके पति ने थोड़ा बहुत छोड़ा था पहले ही ले लिया था (देखें 2 राजाओं 4:2)। अब उसने तारीख तय कर दी थी कि वह उसके बच्चों को उसके हाथ से छीन लेगा।[5]

इस प्रकार वह स्त्री ऐसे व्यक्ति के पास आई जिसका नाम दूसरों की सहायता करने वाले के रूप में प्रसिद्ध था (देखें 2 राजाओं 2:19-22)। उसने अपने दिल की बात उसके सामने खोल दी। उसने कोई विनती नहीं की; परन्तु एक निराशाभरा और अनकहा सवाल छोड़ दिया कि ''मैं क्या करूं?''

सहायता

कहते हैं कि एलीशा ''को सहायता के लिए कभी दूसरी बार नहीं कहना पड़ता था।''[6] उसने पूछा, ''मैं तेरे लिये क्या करूं?'' (4:2क)। परमेश्वर के मन में विधवाओं और अनाथों का सदैव विशेष स्थान रहा है (देखें व्यवस्थाविवरण 10:18; भजन संहिता 146:9; याकूब 1:27)। वह ''अनाथों का पिता और विधवाओं का न्यायी है [यानी उनके अधिकारों की रक्षा करने वाला]'' (भजन संहिता 68:5)। इस प्रकार परमेश्वर का जन सहायता करने को तैयार था।

एलीशा ने उस स्त्री से यह सुनने की प्रतीक्षा नहीं की कि वह क्या करे। इसके बजाय उसने ही बता दिया कि क्या करना है। उसने यह कहते हुए आरम्भ किया, ''मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है?'' (आयत 2ख)। उसने दुखी होकर उत्तर दिया, ''तेरी दासी के घर में एक हांडी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है।'' अनुवादित शब्द ''हांडी'' के लिए इब्रानी शब्द सबसे छोटे बर्तन/या सामान का संकेत देता है।[7] इस कारण NIV में ''थोड़ा सा तेल'' है। कुछ टीकाकारों का मत है कि यह सुगंधित लेप की छोटी बोतल थी जिसे उस स्त्री ने अपने दफ़नाए जाने के लिए रखा था,[8] परन्तु अधिकतर का मानना है कि यह खाना बनाने, चंगाई, राहत देने और लेप लगाने के लिए इस्तेमाल होने वाला आम जेतून का तेल है। जो भी हो, केवल वही उस शाहूकार ने उसके पास रहने दिया था।

एफ. डब्ल्यू. कर्मचर ने स्त्री के खाली घर की तस्वीर इस प्रकार बनाई है: ''नंगी दीवारें, खाली अल्मारियां, [खाली] मेज़ के सामने लकड़ी का एक बैंच, पुआल वाली बोरी, वीरान कमरा।''[9] उसके पास बहुत कम चीज़ें थीं, जो न के बराबर थीं। तौभी उसके पास कुछ था, यानी

तेल की हांडी। और परमेश्वर ने चाहा कि वह जो कुछ भी उसके पास है उसी का इस्तेमाल करे। दो कहावतें ध्यान में आती हैं: ''परमेश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं'' और ''जब बीच में परमेश्वर हो तो थोड़ा भी बहुत होता है।''

एलीशा ने स्त्री से कहा, ''तू बाहर जाकर अपनी सब पड़ोसिनों से खाली बर्तन मांग ले आ, और थोड़े बर्तन न लाना'' (आयत 3क)। अनुवादित शब्द ''बर्तन'' के लिए इब्रानी शब्द सामान्य हैं। इसका इस्तेमाल हर आकार, रूप और माप के बर्तनों के लिए किया जाता था। प्रत्येक बर्तन में केवल एक खूबी थी कि इसे *खाली* होना आवश्यक था। नबी ने यह ताड़ना जोड़ दी कि ''थोड़े बर्तन न लाना'' (आयत 3)। याद रखें कि कुछ निर्देश, इसका महत्व बाद में स्पष्ट किया जाएगा।

आप इसे जैसे भी देखें, एलीशा के निर्देश अजीब हैं। वह स्त्री विरोध कर सकती थी कि ''मेरे बेटे मेरे हाथ से जाने वाले हैं और तू मुझे बर्तन इकट्ठे करने को कह रहा है!'' पर उसने विरोध नहीं किया। वह कह सकती थी, ''मेरे पड़ोसी सोचेंगे कि परेशानियों से मैं पागल हो गई हूं। जब वे मुझे पूछेंगे कि मैं इतने सारे खाली बर्तनों का क्या करूंगी तो मैं उन्हें क्या बताऊंगी? परन्तु उसने नहीं कहा।'' कई बार परमेश्वर की आज्ञाएं हमारी समझ में आती हैं और कई बार नहीं। परन्तु हम जैसा भी सोचें, वे *सही* ही होती हैं।

एलीशा निर्देश देता रहा: ''फिर तूं अपने बेटों समेत अपने घर में जा'' (आयत 4क)। वह इसे एक व्यक्तिगत, निजी आश्चर्यकर्म बनाना चाहता था। ''और द्वार बन्द करके उन सब बर्तनों में तेल उंडेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना'' (आयत 4ख)।

प्रसन्नता

वह स्त्री जाकर (आयत 5क) लोगों से बर्तन मांगने लगी। जल्दी ही उसका घर बर्तनों से भर गया जिसमें बड़े बर्तन, छोटे बर्तन, मध्यम आकार के बर्तन, पुराने बर्तन, नये बर्तन, सजावटी बर्तन और सादा बर्तन, और बर्तन ही बर्तन थे। फिर उसने सामने का द्वार बन्द किया (आयत 5ख)। मैं उस दृश्य की कल्पना इस प्रकार करता हूं:

> स्त्री ने तेल का अपना छोटा बर्तन उठाया। उसके आस पास पड़े बर्तनों के ढेर की तुलना में वह उनसे इतना छोटा और बेकार था! उसने अपने निकटतम बर्तन के ऊपर हाथ में हांडी से तेल डालते हुए सांस रोक ली। तेल गिरने लगा ... और यह बहता गया और बहता गया। उसकी आंखें खुली की खुली थीं। तेल तब तक गिरता रहा जब तक बर्तन किनारे तक भर नहीं जाता। उसने अपने बेटों से कहा, ''जल्दी करो, दूसरा बर्तन मुझे दो!'' तेल तब तक बहता रहा जब तक बर्तन भर नहीं गए, और फिर लड़के भागकर अपनी मां के पास तीसरा बर्तन ले आए। तेल के खत्म न हो रहे प्रतीत होने वाले बर्तन से बर्तन भरने के बाद (आयत 5ग) उस घर में प्रसन्नता लौट आई जिसने बहुत दुख देखा था। मां की हंसी में उसके लड़कों के कहकहे मिल गए। चिन्ता की रेखा उसके चेहरे से मिट चुकी थी और उसके मन का बोझ भी उतर गया था।

अन्त में स्त्री ने अपने बेटों में से एक से कहा, ''मेरे पास एक और भी ले आ'' और उस

ने उस से कहा, ''और बर्तन तो नहीं रहा'' (आयत 6क)। जितने बर्तन वे मांग कर लाए थे सब भर गए। फिर ''तेल थम गया'' (आयत 6ख)। उस छोटी हांडी से तेल बहना बन्द हो गया; अब यह खाली थे; क्योंकि आश्चर्यकर्म पूरा हो गया था। अब उसे ''थोड़े बर्तन न लाना'' का निर्देश समझ आ गया होना चाहिए था। तेल की मात्रा केवल उन बर्तनों तक सीमित थी जितने वह इकट्ठे कर सकती थी।

स्त्री ने एलीशा को उस बड़ी और अद्‌भुत बात बताने के लिए फुर्ती की जो वहां नहीं थी (आयत 7क)। फिर से उसकी आंखों में आंसू टपक रहे होंगे और उसकी आवाज़ कांप रही होगी, परन्तु इस बार उसकी आंखों में खुशी के आंसू थे और उसकी आवाज़ उत्तेजना से कांप रही होगी। उसके नबी को बताते हुए कि क्या-क्या हुआ है, एक बार फिर वहां अनकहा सवाल होगा: ''अब मैं क्या करूं?'' वह बिना ईश्वरीय अगुआई के आगे नहीं बढ़ना चाहती थी।

एलीशा ने उससे कहा, ''जा तेल बेचकर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना'' (आयत 7ख)। ''ऋण भर दे'' उस बेदर्द, बेरहम व्यक्ति को जो उसके प्रिय पुत्रों को दास बनाना चाहता था, उसे भर दे? हां। बाइबल हमें अपने कर्ज़ चुकाने को कहती है (देखें रोमियों 13:8क; NIV)। हैनरी बलंट ने लिखा है, ''शाहूकार चाहे बेरहम हो, पर तुम अन्यायी न होना; हमारे साथ दूसरों का व्यवहार, उनके प्रति हमारे दायित्वों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं लाता।''[10] (देखें रोमियों 12:21।) डब्ल्यू. टी. हेमिल्टन ने कहा कि जो व्यक्ति टेड़े आदमी के साथ ईमानदार है वह [सचमुच में] ईमानदार है।[11] कर्ज़ चुकाने के बाद स्त्री और उसके पुत्रों के पास उन लड़कों के लिए अपने पैरों पर खड़े होने और अपनी मां को कमाकर देने के लिए बड़े होने तक खाने को काफ़ी बच जाना था।

बाइबल की कहानी यहां समाप्त हो जाती है, पर इसके क्रम की कल्पना करना कठिन नहीं:

> तेल बेच दिया गया। साहूकार वापस आया, मां और लड़के उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने सिक्कों का एक थैला उसके हाथों में थमाया। ''यह रहा आपका धन!'' उसने कहा। उसका मुंह खुला रह गया। ''पर, पर, पर,'' वह हकलाने लगा। स्त्री ने आगे कहा, ''परमेश्वर ने हमारी देखभाल की है और हमें तुम्हारे कठोर दिल से बचाया है। आप पैसे ले लें और मैं अपने लड़कों को रखती हूं।'' शाहूकार के अपना सिर हिलाते हुए बाहर जाते देख उसके चेहरे पर रौनक लौट आई होगी।[12]

आज बिना आशा के परिवार

क्या इस दिल दहलाने वाली कहानी से हम कोई सबक सीख सकते हैं? हां यह ''हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई'' थी (रोमियों 15:4)।

दिल टूटना

कहानी के आरम्भ में हमारा परिचय बे-आस परिवार से कराया गया था। यह परमेश्वर का भय मानने वाला परिवार था पर उन पर दुख फिर भी आ गया था। पाप से ग्रस्त इस संसार में कई बार अच्छे लोगों के साथ बुरी बातें होती हैं। उस परिवार ने मृत्यु और कर्ज़ के कारण दुख भोगा था। वे केवल ''वह'' हैं जो घर को तबाह कर सकते हैं। अन्य ''वह'' ''बीमारी,'' ''भागना''

और ''तलाक'' हो सकते हैं। शायद आप में से कई लोग बिखरी आशा वाले घर में रह रहे हैं।

ध्यान दें कि उस विधवा ने अपनी समस्याओं के लिए यहोवा पर आरोप नहीं लगाया। इसके बजाय वह सहायता के लिए उसके पास गई। जब जीवन की समस्याओं से कई लोग परेशान होते हैं तो वे परमेश्वर, बाइबल और कलीसिया जैसे सहायता के ईश्वरीय स्रोतों से अपने आपको दूर कर लेते हैं। हमारे जीवन में चाहे जो भी परेशानियां आएं, कभी इस पर संदेह न करें कि प्रभु आपसे प्रेम करता है और आपकी सहायता करना चाहता है (रोमियों 5:8; इब्रानियों 13:6; 1 पतरस 5:7)।

सहायता

जब परिवार की परिस्थिति निराशाजनक लगे तो हमें क्या करना चाहिए? पहले तो हमें यह मानने के लिए कि हमारे सामने एक परेशानी आई है, उस विधवा की तरह दीन होना आवश्यक है। कइयों के लिए यह मानना कि उनका परिवार मुश्किल में है, परेशानी वाला लगता है। और वे इससे इनकार करते रहते हैं। अपनी समस्याओं से परिचित लोग ही सहायता पा सकते हैं (प्रकाशितवाक्य 3:20; देखें भजन संहिता 81:10ख)।[13]

फिर हमें यह पूछना चाहिए, ''क्या हम ने वह सब कुछ किया है जिससे *हम* इस समस्या को मिटा सकें?'' एलीशा ने स्त्री से पूछा, ''तेरे घर में क्या है?'' (2 राजाओं 4:2)। उसे अपने स्रोतों को देख लेना चाहिए था उसके पास अधिक कुछ नहीं था पर उसके पास कुछ अवश्य था। उसे जो कुछ उसके पास था उसका इस्तेमाल करना था (देखें निर्गमन 4:2; मरकुस 6:38)। उसे अपना ही बोझ उठाने के लिए जो कुछ भी कर सकती थी करना था (देखें मरकुस 14:8क; गलातियों 6:5)। कहते हैं कि ''कई बार सहायता ढूंढ़ने के लिए सबसे बढ़िया जगह आपके हाथ के पास ही होती है।'' हैमिल्डन ने लिखा है:

> यदि कोई उसका इस्तेमाल करता है यदि उसके पास है तो वहां तक जाता है जहां तक वह जा सकता है, तो फिर परमेश्वर अपने हाथ में ले लेता है। उसने कभी *जब तक* होने पर हाथ हाथ में लेने की प्रतिज्ञा नहीं की। ... व्यक्ति को उस प्वायंट से आगे जहां से वह अपने रास्ता साफ़ देख सकता है विश्वास से चलकर तब तक आगे बढ़ना होता है जब तक उसके स्रोत हार न जाएं। वहां पर परमेश्वर अपने हाथ में लेगा। और उससे पहले नहीं![14]

जब आप वह सब कर चुकें जो आप व्यक्तिगत रूप से कर सकते हैं, तो आपको बुद्धिमान मसीही मित्रों के पास जाने की आवश्यकता पड़ सकती है, जैसे एलीशा के पास वह स्त्री आई थी (देखें गलातियों 6:2; नीतिवचन 1:5; 11:14; 12:15; 19:20; 27:9)। जिन पर समस्या नहीं आई है वे आम तौर पर अधिक साफ़ परिस्थिति को देख सकते हैं और समाधान सुझा सकते हैं।

सबसे बढ़कर आपको प्रभु पर भरोसा रखना आवश्यक है। ''थोड़े न लाना'' पर कई संदेश दिए जा चुके हैं (2 राजाओं 4:3; KJV)। इस बात पर ध्यान दिलाया गया है कि स्त्री ने स्वयं कम बर्तन मांगकर मिलने वाली अपनी आशीष को सीमित कर दिया था। (क्या वह और बर्तन उधार लाना चाहती थी?) बाइबल बताती है कि हमारा परमेश्वर उदार परमेश्वर है (मत्ती 6:33;

7:7, 8; इफिसियों 3:20)। उसकी उदारता उस में हमारे भरोसा रखने की हमारी इच्छा से ही सीमित होती है। जब आप अपनी समस्याएं उसे देना सीख जाएंगे, तब आपको पता चल सकता है कि ''परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:7)।

प्रसन्नता

क्या आपके परिवार की परिस्थिति कभी ऐसी हुई है जिसमें लगे कि आप बे-आस हैं? जो कुछ आप कर सकते हैं करें और प्रभु में भरोसा रखें, तो वह आपकी सहायता करेगा। मैं यह तो नहीं बता सकता कि वह आपकी सहायता कैसे करेगा। हो सकता है कि वह उस परेशानी को हटा ही दे या हो सकता है कि वह उस परेशानी को सहने में आपकी सहायता करे। इतना तो पक्का है कि वह आपकी सहायता कर सकता है और करेगा यदि आप उसे करने दें। सैकड़ों नहीं तो मैं दर्जनों मसीही परिवारों को जानता हूं जो पहले केवल निराशा को जानते थे परन्तु अब वे आनन्द से भरे हैं।

कोई आपत्ति कर सकता है, ''पर परमेश्वर ने विश्वास की सहायता के लिए आश्चर्यकर्म किया और हम उस युग में नहीं रहते जिसमें आश्चर्यकर्म होते हैं। वह मेरी सहायता कैसे कर सकता है?'' ऐसा व्यक्ति जो सोचता है कि परमेश्वर केवल आश्चर्यकर्म के द्वारा ही काम कर सकता है कितना तंग सोच वाला है! परमेश्वर ने इस संसार को बनाया और उसे मालूम है कि प्रकृति के उन नियमों में जिन्हें उसने ठहराया है कैसे काम करना है। वह इसे ''ईश्वरीय उपाय'' कहता है। रोमियों 8:28 मेरी पसन्दीदा आयत है। ''और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।''

मैथ्यू हैनरी ने लिखा है कि ''अब हम आश्चर्यकर्मों की अपेक्षा नहीं कर सकते, पर हम अनुग्रह की अपेक्षा कर सकते हैं।''[15] वारेन वियर्सबे ने टिप्पणी की है कि ''प्रभु हमारे कर्ज़ चुकाने में हमारी सहायता के लिए ... आश्चर्यकर्म ... नहीं करता, परन्तु यदि हम भरोसा रखकर आज्ञा मानें तो वह हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है। यदि हम सब कुछ उसे दे दें, तो वह हमें थोड़ा आगे ले जा सकता है।''[16] क्रमचर ने पूछा, ''क्या उसकी सहायता सचमुच में कम आश्चर्यजनक है क्योंकि यह सामान्य माध्यम के द्वारा भेजी गई है?''[17] हम इसका उत्तर ज़ोरदार ''नहीं हैं'' के साथ देते हैं! ''यहोवा अनुग्रहकारी और धर्मी है; और हमारा परमेश्वर दया करनेवाला है'' (भजन संहिता 116:5)!

सारांश

परमेश्वर ने बहुत पहले एक परिवार की सहायता की और आज यदि आप उसे करने दें तो वह आपके परिवार की सहायता कर सकता है। प्रभु की सहायता के आश्वासन के लिए आपको पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि उसके साथ आपका सम्बन्ध सही है। इस वचन का उद्देश्य आज लोगों को यह सिखाना नहीं है कि मसीही कैसे बनें, परन्तु इसमें से दिलचस्प समानताएं बनाई जा सकती हैं:

- उस स्त्री के ऊपर कर्ज़ था जिसे वह चुका नहीं सकती थी। हमारे ऊपर पाप के कर्ज़ का बोझ है, जो ऐसा कर्ज़ है कि हम उसे कभी चुका नहीं सकते (देखें यशायाह 64:6; रोमियों 6:23क)।
- उस स्त्री के पुत्रों के दास बनने का खतरा था। हम पाप के दास हैं (देखें तीतुस 3:3; 2 पतरस 2:19; रोमियों 6:6)।
- परमेश्वर ने उस विधवा की तरह हमारे लिए अनुग्रहकारी उपाय किया है, परन्तु पहले वह हमसे वह करने की अपेक्षा करता है जो हम कर सकते हैं उसने हम से उसमें भरोसा रखने, पानी में डुबकी लेने और फिर उसके लिए जीने के लिए कहा है (मरकुस 16:16; रोमियों 6:3-6; गलातियों 3:26, 27)।
- यदि हम अपने आपको उसे और उसकी इच्छा को सौंप दें, तो वह वैसे ही जैसे इस्राएल में उस विधवा की खाली हांडी को उसने भरा था वह हमारे जीवनों को भी भर सकता है। वह हमारे पाप क्षमा कर देगा (प्रेरितों 2:38), हमें अनन्तकाल के जीवन की आशा देगा (तीतुस 1:2) और दिन ब दिन हमें मज़बूत करेगा (इफिसियों 6:10)।

उसकी स्तुति करो जो हमारे "कटोरों" को (देखें भजन संहिता 23:5) अपने प्रेम से (देखें 1 तीमुथियुस 1:14) भरता है!

टिप्पणियां

[1]डोनल्ड जे. वाइसमैन, 1 एंड 2 किंग्स: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री, टिंडेल ओल्ड टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइसः इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1993), 202. जोसेफस ने संकेत दिया कि यह ओबद्याह की विधवा थी (एंटिक्विटीज़ 9.4.2)। [2]वाइसमैन, 202. [3]यह पूछा जा सकता है कि नबियों के और पुत्र उसे बचाने के लिए क्यों नहीं आए। 2 राजाओं 4:38-44 संकेत देता है कि सभी प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले लोग बिना आर्थिक संसाधनों के थे। [4]एडम क्लार्क, दि होली बाइबल विद ए कमैंट्री एंड क्रिटिकल नोट्स, अंक 2, जोशुआ-एस्तर (न्यूयॉर्कः अबिंग्डन-कोक्सबरी प्रैस, तिथि नहीं), 490. [5]स्त्री ने कहा, "जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए" (आयत 1ख)। परन्तु बच्चे अभी भी उसके साथ थे (आयतें 4-6)। मान लिया जाए कि अन्तिम बार जब साहूकार उसके घर में आया (उसे खाली करने पर), तो उसने उससे कहा था कि वह दोबारा आकर उसके बेटों को ले जाएगा। [6]रिचर्ड न्यूटन, बाइबल मॉडल्स (लंदनः हॉडर एंड स्टाउटन, 1887), 193. [7]सी. एफ. केल एंड एफ़. डेलिश, "1 एंड 2 किंग्स," कमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट, अंक 3, 1 एण्ड 2 किंग्ज़, 1 एण्ड 2 क्रोनिकल्ज़, एज्रा, नहेमायाह, एस्तर (पीबॉडी, मेसाचुएट्सः हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 309; जी. रेविल्सन, "2 किंग्स," दि पुलपिट कमैंट्री, अंक 5, फस्ट एंड सेकण्ड किंग्स, संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफस एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 64. [8]क्लार्क, 491. [9]एफ़. डब्ल्यू. क्रमचर, एलीशा, ए प्रोफेट फ़ॉर अवर टाइम्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 48. [10]हेनरी बलंट, लैक्चरर्स ऑन दि हिस्ट्री ऑफ़ एलीशा (फिलाडेल्फियाः हरमन हूकर, 1839), 52.

[11]डब्ल्यू. टी. हैमिल्टन, "बारो नॉट ए क्र्यू," *द प्रीचर'स पीरियोडिकल* (अप्रैल 1983): 14. [12]एलेन जे. फ्लेचर, *एलीशा, द मिरेकल प्रोफेट* (वाशिंगटन, डी. सी. : रिव्यू एंड हेरल्ड पब्लिशिंग एसोसिएशन, 1960), 34 से लिया गया। [13]हमिल्टन, 13. [14]वही, 14. [15]मैथ्यू हेनरी, *कमैंट्री ऑन द होल बाइबल,* संपा. लेसली एफ़. चर्च (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1961), 404. [16]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिस्टिंक्ट* (पोलोराडो स्प्रिंग, कोलोः विक्टर, 2002), 29. [17]क्रमचर, 52.